बृहस्पतिवार
34 साल से देहरादून का विश्वास
12 नवम्बर 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 291
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com
Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

खाई में गिरी बोलेरो

मां-बेटी सहित तीन की मौत

हमारे संवाददाता

अल्मोड़ा। सड़क हादसे में देर रात एक बोलेरो वाहन के खाई में गिर जाने से मां-बेटी सहित तीन की मौत हो गयी। मां-बेटी भाई दूज मनाकर घर लौट रही थी। हादसे का पता सुबह लगने पर पुलिस व एसडीआरएफ ने मौके पर पहुंच कर तीन शवों को बाहर निकालकर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी है।

◆भाई दूज मनाकर लौट रही थीं मां-बेटी

सेराघाट-पिथौरागढ़ मोटर मार्ग पर हरड़ा के पास बुधवार देर रात एक बोलेरो मैक्स अनियंत्रित होकर करीब 400 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। इस दर्दनाक हादसे में मां-बेटी समेत वाहन चालक की मौत हो गई। तीनों ही हरड़ा गांव के निवासी थे।



जानकारी के अनुसार, मां-बेटी भाई दूज का त्योहार मनाने के लिए पिथौरागढ़ गई थीं। बुधवार देर रात दोनों बोलेरो मैक्स में सवार होकर अपने गांव लौट रही थीं। इसी दौरान हरड़ा के पास अचानक वाहन अनियंत्रित हो गया और गहरी खाई में जा गिरा। हादसा इतना देर रात हुआ कि किसी को इसकी जानकारी तक नहीं मिल सकी। आज सुबह राहगीरों की नजर सड़क से नीचे खाई में गिरे दुर्घटनाग्रस्त वाहन पर पड़ी, जिसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। सुबह करीब नौ बजे सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू अभियान शुरू किया। खाई करीब 400 मीटर गहरी होने के कारण शवों को बाहर निकालने में रेस्क्यू टीम को काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। वहीं, एक ही गांव के तीन लोगों की मौत की खबर से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

सीएम धामी ने किया तीन दिवसीय जौनपुर महोत्सव का शुभारंभ

हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने थत्यूड़ पहुंचकर तीन दिवसीय जौनपुर महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र के विकास को गति देने के उद्देश्य से विभिन्न विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार टिहरी झील क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। क्षेत्र में साहसिक पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ ही स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि तिवाड़ गांव को पर्यटन ग्राम घोषित कर क्षेत्र की पर्यटन संभावनाओं को विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है, जिससे स्थानीय लोगों को स्वरोजगार और रोजगार के अवसर मिल सकेंगे।



उन्होंने बताया कि पर्यटन सुविधाओं के विस्तार के लिए कद्दूखाल में करीब 8 करोड़ रुपये की लागत से वाहन पार्किंग का निर्माण कराया जा रहा है। इससे पर्यटकों और स्थानीय लोगों को आवागमन एवं पार्किंग की बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी। कहा कि राज्य सरकार विकास, पर्यटन और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण को प्राथमिकता दे रही है। जौनपुर महोत्सव जैसे आयोजन क्षेत्र की समृद्ध लोकसंस्कृति, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को पहचान दिलाने के साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर विधायक प्रीतम सिंह पंवार, ओबीसी आयोग के अध्यक्ष संजय नेगी, भाजपा जिला अध्यक्ष उदय रावत, मसूरी नगर पालिका अध्यक्ष मीरा सकलानी सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे।

दून वैली मेल

संपादकीय

पुराने जख्मों को फिर कुरेदा

राजनीति में कुछ किताबें केवल पढ़ी नहीं जातीं, उनके पन्नों के बीच दबे इतिहास को भी खंगाला जाता है। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की आत्मकथा बिलीन्गिंग: ए जर्नी आफ लव इन दिनों कुछ ऐसा ही कर रही है। किताब बाजार में आई तो चर्चा सोनिया गांधी के निजी जीवन, उनके राजनीतिक सफर और गांधी परिवार के अनुभवों की होनी चाहिए थी, लेकिन इसके पन्नों ने भारतीय राजनीति के पुराने जख्मों को फिर कुरेद दिया। भाजपा ने किताब को कांग्रेस के ऐतिहासिक अपराधों पर पर्दा डालने की कोशिश बताया है, तो कांग्रेस इसे व्यक्तिगत संस्मरण को राजनीतिक रंग देने की कोशिश करार दे रही है। लेकिन इस पूरे विवाद में सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि सोनिया गांधी ने अपनी किताब में क्या लिखा है, बल्कि यह है कि भारतीय राजनीति अपने अतीत का सामना करने से इतनी असहज क्यों होती है? सोनिया गांधी की किताब में 1984 के सिख विरोधी दंगों, आपातकाल, राजीव गांधी, इंदिरा गांधी और कांग्रेस के राजनीतिक सफर से जुड़े प्रसंग हैं। 1984 के दंगों को उन्होंने दुखद और शर्मनाक अध्याय बताया है। साथ ही राजीव गांधी पर लगे आरोपों के संदर्भ में उनका पक्ष भी सामने रखा है। आपातकाल के प्रसंग में इंदिरा गांधी को राजनीतिक दबाव और अलगाव से जूझती नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भाजपा का आरोप है कि यह इतिहास की जिम्मेदारी स्वीकार करने के बजाय उसे अपने अनुकूल व्याख्यायित करने का प्रयास है। बोफोर्स प्रकरण पर भी भाजपा ने सवाल उठाए हैं। सवाल उठाना भाजपा का राजनीतिक अधिकार है, लेकिन इस बहस को केवल कांग्रेस बनाम भाजपा के आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित कर देना देश के साथ अन्याय होगा। इतिहास किसी राजनीतिक दल की निजी संपत्ति नहीं है। न कांग्रेस उसे अपनी सुविधा से लिख सकती है और न भाजपा अपनी राजनीतिक जरूरतों के हिसाब से उसकी व्याख्या कर सकती है। आत्मकथा किसी व्यक्ति का अपना अनुभव, दृष्टिकोण और स्मृतियों का दस्तावेज होती है। उसमें लेखक अपने जीवन की घटनाओं को अपनी नजर से देखता है। लेकिन जब लेखक कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसके परिवार ने दशकों तक देश की सत्ता और राजनीति को प्रभावित किया हो, तब उसकी निजी स्मृतियां भी सार्वजनिक सवालों से बच नहीं सकतीं। सोनिया गांधी के सामने भी यही चुनौती है। वह केवल एक राजनीतिक परिवार की सदस्य नहीं हैं, बल्कि कांग्रेस की सबसे प्रभावशाली नेताओं में रही हैं। लंबे समय तक पार्टी का नेतृत्व करने और दस वर्षों तक यूपीए सरकार के केंद्र में रहने के कारण उनके राजनीतिक निर्णयों का मूल्यांकन भी होना चाहिए। 2004 में प्रधानमंत्री पद स्वीकार न करने का उनका फैसला राजनीतिक इतिहास का हिस्सा है, लेकिन इससे कांग्रेस के शासनकाल की जवाबदेही समाप्त नहीं हो जाती। इसी तरह 1984 के सिख विरोधी दंगों को केवल एक दुखद घटना बताकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। हजारों लोगों की जान गई। परिवार उजड़े। न्याय के लिए पीड़ितों को दशकों तक इंतजार करना पड़ा। यह सवाल आज भी प्रासंगिक है कि सत्ता में बैठे लोगों ने उस समय अपनी जिम्मेदारी कितनी निभाई? किसकी राजनीतिक जवाबदेही तय हुई? न्याय में इतनी देरी क्यों हुई? किसी भी आत्मकथा में इन सवालों का जवाब व्यक्तिगत सफाई से आगे जाकर देना होगा। आपातकाल भी भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का ऐसा अध्याय है जिसे किसी राजनीतिक व्याख्या के सहारे हल्का नहीं किया जा सकता। लोकतांत्रिक अधिकारों का निलंबन, प्रेस पर प्रतिबंध और विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी भारतीय लोकतंत्र की बड़ी विफलता थी। इंदिरा गांधी के राजनीतिक दबाव और परिस्थितियों का उल्लेख अपनी जगह है, लेकिन लोकतंत्र को कुचलने के फैसले की जिम्मेदारी भी इतिहास में दर्ज रहेगी। यहां भाजपा को भी आत्ममंथन से बचने का अधिकार नहीं है। यदि कांग्रेस से आपातकाल और 1984 पर जवाब मांगा जा रहा है तो आज की सत्ता से भी लोकतांत्रिक संस्थाओं, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विपक्ष की भूमिका और नागरिक अधिकारों पर सवाल पूछे जाएंगे। लोकतंत्र में जवाबदेही का सिद्धांत सरकार बदलने के साथ नहीं बदलता। दरअसल, सोनिया गांधी की किताब ने एक बार फिर भारतीय राजनीति की उस बीमारी को उजागर किया है जिसमें हर दल इतिहास के सुविधाजनक हिस्से को याद रखना चाहता है और असुविधाजनक हिस्से को दूसरे के सिर मढ़ देना चाहता है। कांग्रेस भाजपा के शासनकाल पर सवाल उठाती है, भाजपा कांग्रेस के अतीत को कटघरे में खड़ा करती है। दोनों के बीच आम नागरिक के मूल सवाल कहीं पीछे छूट जाते हैं। इस विवाद का एक दूसरा पहलू भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। किताब के प्रकाशन को लेकर पहले पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया और सोनिया गांधी के प्रतिनिधियों के बीच संपादकीय बदलावों पर सहमति नहीं बन सकी। बाद में हार्पर कालिन्स ने इसके भारतीय प्रकाशन की जिम्मेदारी ली। विवादित संपादकीय सुझावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, चीन और अल्पसंख्यकों से जुड़े संदर्भों की चर्चा भी सामने आई। हालांकि प्रकाशक ने बाहरी दबाव की बात से इनकार किया था। यह प्रसंग भी कई सवाल खड़े करता है। क्या किसी लेखक को अपने अनुभव और विचार बिना अनावश्यक हस्तक्षेप के रखने की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए? क्या प्रकाशक को तथ्यों की जांच और संपादकीय जिम्मेदारी निभाने का अधिकार नहीं है? दोनों अधिकार लोकतांत्रिक समाज में महत्वपूर्ण हैं। लेकिन संपादन और सेंसरशिप के बीच की रेखा भी स्पष्ट होनी चाहिए। किताब को लेकर बिहार की राजनीति में भी विवाद सामने आया है। नीतीश कुमार और विपक्षी गठबंधन के गठन से जुड़े संदर्भों पर जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने आपत्ति जताई है। इससे साफ है कि इस आत्मकथा की राजनीतिक गूंज केवल भाजपा और कांग्रेस के बीच सीमित नहीं रहने वाली। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिस देश को अपने भविष्य की चिंता करनी चाहिए, उसकी राजनीति बार-बार अतीत के पन्नों में उलझ जाती है। बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसानों की समस्याएं और लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता जैसे सवाल पीछे चले जाते हैं। राजनीतिक दलों के लिए इतिहास चुनावी हथियार बन जाता है और जनता के लिए वह एक बार फिर अधूरी बहस। किताब के पन्ने सोनिया गांधी ने लिखे हैं, लेकिन उससे उठे सवाल पूरे भारतीय राजनीतिक तंत्र के सामने हैं। राजनीति में विरासत बचाने की होड़ बहुत हुई, अब इतिहास के सामने जवाबदेही तय करने का वक्त है।

दो दशक बाद फिर 'सवाल'

◆असम की किशोरी से जुड़े कथित दुष्कर्म प्रकरण ने पकड़ा तूल

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में कुछ मामले कभी खत्म नहीं होते, बस सही राजनीतिक मौके का इंतजार करते हैं। वर्ष 2003 का जेनी प्रकरण इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। करीब 23 साल पहले तत्कालीन कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत को सत्ता के गलियारों में असहज करने वाला यह मामला अब फिर सुर्खियों में है। असम की उस किशोरी, जिसने उस समय हरक सिंह रावत पर गंभीर आरोप लगाए थे, ने अब पुराने मामले की नए सिरे से जांच और डीएनए परीक्षण की मांग उठाई है। मामला सामने आते ही भाजपा और कांग्रेस के बीच सियासी तलवारें खिंच गई हैं।

विडंबना देखिए, जिस प्रकरण को एक समय जांच और डीएनए परीक्षण के निष्कर्षों के बाद समाप्त मान लिया गया था, वह दो दशक से अधिक समय बाद फिर सवालों के घेरे में है। जेनी का कहना है कि तत्कालीन जांच प्रक्रिया में उसकी बात ठीक से नहीं सुनी गई। दूसरी ओर हरक सिंह रावत पुराने जांच निष्कर्षों और अदालत से मिली राहत का हवाला देकर आरोपों को राजनीतिक साजिश बता रहे हैं। लेकिन इस पूरे प्रकरण में सबसे अहम सवाल यह नहीं है कि किस दल को राजनीतिक लाभ मिलेगा, बल्कि यह है कि एक महिला की न्याय की मांग का निष्पक्ष परीक्षण होगा या फिर उसे भी राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप के बीच उलझा दिया जाएगा?

वर्ष 2003 में उत्तराखंड की राजनीति अभी अपने शुरुआती दौर में थी। एनडी तिवारी मुख्यमंत्री थे और हरक सिंह रावत कैबिनेट मंत्री। इसी दौरान असम की रहने वाली जेनी ने एक बच्चे को जन्म दिया और हरक सिंह रावत पर गंभीर आरोप लगाए। महिला ने आरोप लगाया था कि नौकरी दिलाने का झांसा देकर उसका शोषण किया गया था। उस समय उसकी उम्र करीब 16 वर्ष बताई गई थी। मामले ने राजनीतिक तूल पकड़ा। विधानसभा से

◆पुराने डीएनए परीक्षण और सीबीआई जांच पर भी उठ रहे सवाल
◆2027 की चुनावी बिसात के बीच भाजपा-कांग्रेस आमने-सामने

लेकर सचिवालय तक हलचल मची और हरक सिंह रावत को मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा। तत्कालीन सरकार ने सीबीआई जांच की संस्तुति की। जांच में डीएनए परीक्षण कराया गया और सीबीआई के निष्कर्षों में बच्चे का डीएनए हरक सिंह रावत से मेल नहीं खाया। बाद में उन्हें इस मामले में कानूनी राहत मिली। तब लगा कि विवाद का पटाक्षेप हो गया है। लेकिन अब जेनी ने पुराने जांच निष्कर्षों और प्रक्रिया पर ही सवाल खड़े कर दिए हैं।

जेनी का दावा है कि उस समय भाषा की समस्या के कारण वह जांच की प्रक्रिया और दस्तावेजों को ठीक से समझ नहीं पाई थी। उसका आरोप है कि उसकी बात को अपेक्षित गंभीरता से नहीं सुना गया। अब उसका बेटा 23 वर्ष का हो चुका है और वह नए सिरे से डीएनए परीक्षण कराकर मामले की सच्चाई सामने लाना चाहती है। महिला की शिकायत के बाद पुलिस स्तर पर जांच की प्रक्रिया शुरू हुई है। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि इस शिकायत के आधार पर नई प्राथमिकी दर्ज होगी या सीबीआई जांच की कोई नई संस्तुति की जाएगी। यहां एक महत्वपूर्ण बात है। पुराने डीएनए परीक्षण का निष्कर्ष हरक सिंह रावत के पक्ष में रहा है। ऐसे में नए परीक्षण की मांग पर निर्णय कानूनी तथ्यों, उपलब्ध साक्ष्यों और सक्षम जांच एजेंसी की प्रक्रिया के आधार पर ही होना चाहिए। न किसी आरोप को बिना जांच सच माना जा सकता है और न किसी शिकायत को केवल पुरानी जांच का हवाला देकर अनसुना किया जाना चाहिए।

मामले के फिर उभरते ही हरक सिंह रावत ने भाजपा पर राजनीतिक साजिश का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि इस मामले की सीबीआई जांच पहले हो चुकी है और डीएनए परीक्षण में भी आरोपों की पुष्टि नहीं हुई थी। उनका तर्क है कि अंकिता भंडारी हत्याकांड में कथित वीआईपी को लेकर सरकार से सवाल पूछने के कारण उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। हरक सिंह का यह आरोप भी राजनीतिक बहस का हिस्सा है। लेकिन यहां सवाल उनसे भी है। यदि पुरानी जांच निष्पक्ष और निर्णायक थी तो नए सिरे से उठे सवालों का तथ्यात्मक जवाब देना उनकी राजनीतिक जिम्मेदारी है। केवल साजिश का आरोप लगाकर किसी नए घटनाक्रम को खारिज नहीं किया जा सकता।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे दिलचस्प

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

'महामंथन' में हैट्रिक के लिए बनेगी 'रणनीति'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने अब अपनी सियासी बिसात बिछानी शुरू कर दी है। सत्ता में लगातार तीसरी बार वापसी यानी हैट्रिक का लक्ष्य लेकर चल रही भाजपा के लिए अब चुनावी तैयारी केवल नारों और दावों तक सीमित नहीं रहने वाली। पार्टी संगठन से लेकर सरकार और विधायकों तक की भूमिका नए सिरे से तय करने की तैयारी में है। इसी रणनीति का बड़ा पड़ाव 21 और 22 नवंबर को हरिद्वार में होने वाली विस्तारित प्रदेश कार्यसमिति की बैठक होगी।

इस बैठक में भाजपा के प्रदेश प्रभारी राम माधव, सह प्रभारी बांसुरी स्वराज और अरविंद मेनन के साथ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट और प्रदेश महामंत्री संगठन फणींद्रनाथ शर्मा मौजूद रहेंगे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी बैठक को राष्ट्रीय स्तर का राजनीतिक महत्व देगी। पार्टी के सामने सबसे बड़ा लक्ष्य केंद्रीय नेतृत्व की ओर से तय किए गए 65 पार के नारे को चुनावी हकीकत में बदलने का है। गृह मंत्री अमित शाह उत्तराखंड में 65 पार का लक्ष्य घोषित कर चुके हैं। यह लक्ष्य भाजपा के लिए जितना महत्वाकांक्षी है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। 70 विधानसभा सीटों वाले उत्तराखंड में लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल करना आसान नहीं है। पार्टी के सामने सत्ता विरोधी माहौल, बेरोजगारी, भर्ती प्रकरण, अंकिता भंडारी हत्याकांड, जमीनों के सवाल और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी शिकायतों जैसी चुनौतियां हैं।

भाजपा नेतृत्व जानता है कि केवल केंद्र और राज्य सरकार की उपलब्धियां

◆राजनाथ सिंह और राम माधव की मौजूदगी में तय होगी चुनावी दिशा
◆भाजपा के लिए 65 पार के लक्ष्य को जमीन पर उतारने की है चुनौती
◆कमजोर सीटों व विधायकों के प्रदर्शन पर रहेगा इस बार खास फोकस

गिनाने से चुनावी नैरेटिव तैयार नहीं होगा। उसे स्थानीय स्तर पर जनता की नाराजगी भी दूर करनी होगी। यही वजह है कि संगठन की बैठक में चुनावी रणनीति के साथ सांगठनिक कमजोरियों की समीक्षा पर भी जोर रहने वाला है। भाजपा के चुनावी रोडमैप में कमजोर विधानसभा क्षेत्रों को मजबूत करना सबसे अहम चुनौती है। पार्टी ने करीब तीन हजार कमजोर बूथ चिह्नित किए हैं। प्रदेश की सभी 70 विधानसभा सीटों पर विस्तारकों की तैनाती भी की जा चुकी है। इनकी जिम्मेदारी बूथ स्तर पर संगठन की स्थिति, कार्यकर्ताओं की सक्रियता और जनता के बीच पार्टी की स्वीकार्यता का फीडबैक जुटाना है।

हरिद्वार में प्रदेश कार्यसमिति की बैठक आयोजित करने के पीछे भी राजनीतिक संदेश है। पिछले चुनावों में हरिद्वार जिले में भाजपा का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा था। ऐसे में पार्टी इस क्षेत्र को चुनावी रणनीति के केंद्र में रखकर अपनी कमजोरियों को दूर करना चाहती है। भाजपा के सामने एक और बड़ा सवाल मौजूदा विधायकों की राजनीतिक स्वीकार्यता का है। पार्टी नेतृत्व पहले ही संकेत दे चुका है कि टिकट का आधार केवल वर्तमान विधायक होना नहीं, बल्कि जीतने की क्षमता होगी। क्षेत्र में सक्रियता, जनता के बीच पकड़, कार्यकर्ताओं से तालमेल और संगठन का फीडबैक टिकट वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। ऐसे में विधायकों के लिए भी आने वाले महीने निर्णायक साबित हो सकते हैं। जिन क्षेत्रों में जनता की नाराजगी है, वहां उसे दूर करना और सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाना उनकी जिम्मेदारी होगी। पार्टी कमजोर प्रदर्शन वाले क्षेत्रों में चेहरे बदलने से भी परहेज करेगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

भाजपा की रणनीति केवल संगठनात्मक बैठकों तक सीमित नहीं है। पार्टी नवंबर और दिसंबर में केंद्रीय नेताओं के कार्यक्रमों के जरिए चुनावी माहौल तैयार करने की योजना बना रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

71 लाख से संवरा मोहनचट्टी आयुर्वेदिक अस्पताल

ऋषिकेश(आरएनएस)। राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय मोहनचट्टी अब आधुनिक आयुर्वेदिक वेलनेस सेंटर के रूप में विकसित हो चुका है। 71.61 लाख रुपये की लागत से चिकित्सालय परिसर में हाईटेक योग हॉल, पंचकर्म कक्ष और अन्य आधुनिक सुविधाएं विकसित की गई हैं। इस परिसर को पहाड़ी वास्तुशैली में संवारा गया है। यमकेश्वर विधायक रेनू बिष्ट ने वेलनेस सेंटर का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि जिला योजना के अंतर्गत ग्रामसभा जोगियाणा, मोहनचट्टी में इस वेलनेस सेंटर का निर्माण कार्य 5 फरवरी 2026 को शुरू हुआ था। ग्रामीण निर्माण विभाग, प्रखंड कोटद्वार की ओर से निर्माण कार्य पूरा किया गया है। केंद्र के शुरू होने से स्थानीय लोगों के साथ ही ऋषिकेश और मोहनचट्टी पहुंचने वाले पर्यटकों को भी योग, ध्यान और पारंपरिक आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियों का लाभ मिल सकेगा।उन्होंने कहा कि वेलनेस सेंटर में अभ्यंग, स्वेदन, शिरोधारा के साथ मर्म थेरेपी, अग्निकर्म और कपिंग थेरेपी जैसी पारंपरिक उपचार सुविधाएं उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। इसके लिए विशेष उपचार कक्ष, ऑपरेशन थिएटर और पंचकर्म सहायक की व्यवस्था भी की गई है। कहा कि चिकित्सालय परिसर में हर्बल गार्डन भी विकसित किया जा रहा है। यहां विभिन्न औषधीय पौधे लगाए जाएंगे और उनके औषधीय गुणों एवं पारंपरिक उपयोगों की जानकारी भी प्रदर्शित की जाएगी। इससे पर्यटक उत्तराखंड की औषधीय वनस्पतियों को करीब से जान सकेंगे।

खेतों में फसल की जगह उग रही खरपतवार

कोटद्वार(आरएनएस)। विकासखंड दुगड्डा की ग्राम पंचायत सिमलचौड़ के राजस्व ग्राम ऐता में सिंचाई सुविधा के अभाव में उपजाऊ कृषि भूमि बंजर होने के कगार पर है। खेतों की सिंचाई के लिए स्थापित हाईड्रम योजना पिछले तीन वर्षों से ठप पड़ी है। योजना का रखरखाव नहीं होने से काश्तकारों के खेत सूखे पड़े हैं और खरीफ व रबी की फसलों के स्थान पर खरपतवार उग रही है।ग्राम पंचायत सिमलचौड़ का ऐता गांव खोह नदी के तट पर बसा है। पूर्व में गांव के निकटवर्ती क्षेत्र से पाइप के माध्यम से सिंचाई टैंक तक पानी पहुंचाया जाता था। बाद में कृषि भूमि को सिंचित करने के लिए वर्ष 1998 में आधुनिक तकनीक पर आधारित हाईड्रम योजना स्थापित की गई। इससे काश्तकारों को सिंचाई की सुविधा मिलने लगी थी।पहाड़ों में अतिवृष्टि के दौरान खोह नदी का जलस्तर बढ़ने से योजना का ढांचा क्षतिग्रस्त होने लगा। शुरुआत में संबंधित विभाग की ओर से कुछ वर्षों तक योजना का रखरखाव किया गया, लेकिन बाद में नहरों के क्षतिग्रस्त होने और मशीनों में तकनीकी खामियां आने से योजना पूरी तरह ठप हो गई।ग्रामीणों का कहना है कि सिंचाई सुविधा नहीं मिलने से खेती प्रभावित हो रही है।

चोरी के मामले युवक को भेजा जेल

रुड़की(आरएनएस)। सिविल लाइंस क्षेत्र में तीन दिन पहले कार चोरी हो गई थी। पुलिस ने केस दर्ज कर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो एक संदिग्ध युवक कैद हो गया था। तभी से पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। मंगलवार की रात पुलिस ने सालियर गांव निवासी आरोपी विकास को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

व्यापारियों को फुटपाथ से अतिक्रमण हटाने के अपील

विकासनगर(आरएनएस)। दीपावली का पर्व समाप्त होने के बाद बाजार की व्यवस्था दुरुस्त करने और फुटपाथों को अतिक्रमणमुक्त बनाने के लिए उद्योग व्यापार मंडल विकासनगर ने व्यापारियों से दुकानों के बाहर रखा सामान हटाने की अपील की है। व्यापार मंडल ने कहा कि सभी व्यापारी अपनी दुकानों का सामान निर्धारित सीमा के भीतर ही रखें और प्रतिष्ठानों के सामने बने फुटपाथ पूरी तरह खाली करें। व्यापार मंडल ने कहा कि कपड़े, मिठाई, परचून, मंदिर-पूजा सामग्री सहित किसी भी प्रकार की दुकान के संचालक को फुटपाथ पर सामान रखने की अनुमति नहीं होगी। विशेष रूप से पहाड़ी गली चौक से अस्पताल रोड चौक तक के सभी व्यापारियों को तत्काल इस व्यवस्था का पालन करने को कहा गया है। व्यापार मंडल ने चेतावनी दी है कि अतिक्रमण के मामले में अब किसी तरह की लापरवाही या बहानेबाजी स्वीकार नहीं की जाएगी। यदि किसी व्यापारी ने दुकान के बाहर फुटपाथ पर सामान रखकर अतिक्रमण किया तो प्रशासन की ओर से चालान करने के साथ ही नियमानुसार कानूनी कार्रवाई भी की जा सकती है। व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजय गुप्ता ने व्यापारियों से अपील की है कि प्रशासनिक कार्रवाई के दौरान किसी को असहज स्थिति या अपमान का सामना न करना पड़े, इसके लिए स्वयं जिम्मेदारी समझते हुए फुटपाथ खाली रखें। बाजार में आवागमन सुचारु बनाए रखने और पैदल चलने वाले लोगों की सुविधा के लिए फुटपाथों को अतिक्रमणमुक्त रखना जरूरी है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

'हस्ताक्षरों' से धामी सरकार की 'घेराबंदी'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सत्ता पर तीसरी बार काबिज होने की तैयारी कर रही भाजपा के सामने कांग्रेस ने चुनावी रणभेरी बजाने से पहले ही मोर्चा खोल दिया है। कांग्रेस अब केवल प्रेस कांफ्रेंस और बयानों के भरोसे सरकार को घेरने के बजाय जनता के बीच उतरने की रणनीति पर काम कर रही है। धामी सरकार के खिलाफ प्रदेशव्यापी हस्ताक्षर अभियान इसी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा है। कांग्रेस ने भ्रष्टाचार, अंकिता भंडारी हत्याकांड, जमीनों के सवाल और सरकार की कार्यप्रणाली को निशाने पर लेकर सत्ता की घेराबंदी शुरू कर दी है।

◆उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव की घोषणा से पहले शुरू होगा कांग्रेस पार्टी का सियासी शक्ति परीक्षण
◆भ्रष्टाचार, अंकिता भंडारी हत्याकांड और जमीन के सवालों पर सरकार को कठघरे में खड़ा करने की तैयारी
◆गणेश गोदियाल ने श्रीनगर से फूंका आंदोलन का बिगुल, 23 नवंबर को सैलजा के नेतृत्व में राजभवन कूच

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने 10 नवंबर को श्रीनगर से इस अभियान का आगाज किया। संदेश साफ है कि कांग्रेस 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले सरकार को उसके कार्यकाल के सवालों पर घेरना चाहती है। पार्टी ने 30 नवंबर तक प्रदेशव्यापी अभियान चलाने का लक्ष्य रखा है। कार्यकर्ताओं को गांवों, कस्बों, बाजारों और शहरों में पहुंचकर जनता के हस्ताक्षर जुटाने की जिम्मेदारी दी गई है। लेकिन इस अभियान के पीछे एक बड़ा राजनीतिक सवाल भी है। क्या कांग्रेस वास्तव में जनता के आक्रोश को आंदोलन में बदलने जा रही है या फिर यह भी पार्टी के उन कार्यक्रमों में शामिल होकर रह जाएगा, जिनकी शुरुआत तो बड़े दावों के साथ होती है, लेकिन कुछ दिनों बाद सियासी शोर में खो जाते हैं?

कांग्रेस ने इस बार सरकार के खिलाफ मुद्दों की ऐसी फेहरिस्त तैयार की है, जिसमें प्रदेश की राजनीति के सबसे संवेदनशील सवाल शामिल हैं। अंकिता भंडारी हत्याकांड में कथित वीआईपी का मुद्दा, जमीनों को लेकर उठ रहे विवाद, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के आरोप कांग्रेस के अभियान के प्रमुख हथियार हैं। पार्टी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और मंत्रिमंडल के कुछ सदस्यों को भी निशाने पर ले रही है। कांग्रेस ने मुख्यमंत्री के साथ मंत्री रेखा आर्य, गणेश जोशी और डा. धन सिंह रावत को लेकर सवाल उठाए हैं। पार्टी इन मामलों की निष्पक्ष जांच और जवाबदेही तय करने की मांग कर रही है। हालांकि इन आरोपों को अभी आरोपों के रूप में ही देखा जाना चाहिए। कांग्रेस की रणनीति सरकार को एक-दो मुद्दों पर नहीं, बल्कि पूरे शासनकाल के कामकाज पर कठघरे में खड़ा करने की है। पार्टी चाहती है कि जनता के बीच यह सवाल पहुंचे कि राज्य गठन के 26 साल बाद भी पहाड़ के सामने पलायन, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, शिक्षा और जमीन जैसे सवाल क्यों खड़े हैं?

हस्ताक्षर अभियान का अगला बड़ा पड़ाव 23 नवंबर होगा। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय से लोकभवन तक पदयात्रा निकालने की तैयारी है। इसमें प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा भी शामिल होंगी। कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल प्रदेशभर से जुटाए गए हस्ताक्षरयुक्त बैनर और पंपलेट राज्यपाल को सौंपकर सरकार के खिलाफ कार्रवाई और निष्पक्ष जांच की मांग करेगा। इसके बाद 25 से 30 नवंबर तक जिला और महानगर मुख्यालयों में प्रतीकात्मक अदालतें लगाई जाएंगी।

नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सरकार की नीतियों और कथित भ्रष्टाचार को जनता के सामने रखने की योजना है। सरकार को घेरने निकली कांग्रेस के सामने अपनी राजनीतिक जमीन बचाने की चुनौती भी है। प्रदेश में भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल करने की रणनीति बना रही है। कांग्रेस के लिए यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन की लड़ाई नहीं, बल्कि अपने राजनीतिक अस्तित्व और संगठनात्मक ताकत साबित करने का भी अवसर है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि कांग्रेस के पास सरकार को घेरने के मुद्दे तो हैं, लेकिन क्या उसके पास उन मुद्दों को चुनाव तक जिंदा रखने वाला संगठन और नेतृत्व भी है? क्या हस्ताक्षर अभियान गांवों तक पहुंचेगा? क्या पार्टी के बड़े नेता एक मंच पर दिखाई देंगे? क्या कार्यकर्ता चुनाव तक सड़क पर टिके रहेंगे? उत्तराखंड की राजनीति में कांग्रेस के सामने यह परीक्षा नई नहीं है। सरकार के खिलाफ असंतोष को वोट में बदलने के लिए केवल आरोपों की सूची काफी नहीं होती। जनता को यह भरोसा भी चाहिए कि जो विकल्प सामने है, वह सत्ता में आने के बाद उन सवालों का समाधान कर सकेगा।

दरअसल, कांग्रेस का यह अभियान धामी सरकार के खिलाफ विरोध दर्ज कराने से कहीं आगे की राजनीतिक कवायद है। यह 2027 के चुनाव से पहले जनता की नब्ज टटोलने, कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश है। भाजपा के लिए भी यह अभियान एक राजनीतिक चुनौती है। सरकार को अब केवल उपलब्धियों के विज्ञापनों और विकास के दावों से नहीं, बल्कि विपक्ष के सवालों का जवाब देकर भी अपनी विश्वसनीयता साबित करनी होगी। लेकिन कांग्रेस को भी समझना होगा कि हस्ताक्षरों की संख्या से सत्ता का रास्ता नहीं खुलता। जनता का भरोसा जीतना पड़ता है।

अगर यह अभियान केवल बैनर, ज्ञापन और राजभवन कूच तक सिमट गया तो इसका राजनीतिक लाभ सीमित रहेगा। सवाल सीधा है कि कांग्रेस धामी सरकार के खिलाफ जनता के हस्ताक्षर जुटा रही है या 2027 में अपनी वापसी के लिए जनता का भरोसा? इसका जवाब अभियान की भीड़ नहीं, उसकी निरंतरता और चुनावी नतीजे देंगे।

सात कन्याओं का सामूहिक विवाह कराएगा भारत विकास परिषद

कोटद्वार(आरएनएस)। भारत विकास परिषद कोटद्वार की बैठक में सात कन्याओं का सामूहिक विवाह कराने का निर्णय लिया गया। आगामी 22 नवंबर को सुबह 10 बजे आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की सात कन्याओं का विवाह कराया जाएगा।संयोजक कैलाश चंद्र अग्रवाल ने बताया कि परिषद की ओर से सभी वर-वधुओं को गृहस्थी के लिए आवश्यक जीवनोपयोगी वस्तुएं भेंट की जाएंगी। विवाह समारोह का पूरा खर्च परिषद स्वयं वहन करेगी। कैलाश चंद्र अग्रवाल संयोजक और राजेंद्र जखमोला सह संयोजक बनाए गए हैं। अध्यक्ष श्याम सुंदर अग्रवाल ने कहा कि सामूहिक कन्या विवाह पुनीत कार्य है।उन्होंने नगर और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों से इस आयोजन में सहयोग और अंशदान करने की अपील की। सचिव प्रदीप अग्रवाल के संचालन में हुई बैठक में राजदीप माहेश्वरी, राकेश मित्तल, बीना मित्तल, गोपाल बंसल, गोपाल कुकरेती, मनोज नैथानी, सेवकराम मानुजा, दीपक कपटियाल सहित परिषद के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

घोषणाओं से आगे नहीं बढ़ पाया वेंडिंग जोन, सड़क किनारे लग रहीं ठेलियां

विकासनगर (आरएनएस)। नगर पालिका क्षेत्र में वेंडिंग जोन बनाने की कवायद लंबे समय से चल रही है, लेकिन अब तक यह योजना धरातल पर नहीं उतर पाई है। वेंडिंग जोन नहीं होने के कारण रेहड़ी-ठेली व्यापारी राष्ट्रीय राजमार्ग और फुटपाथों के किनारे अपनी दुकानें लगा रहे हैं। इससे शहर में जाम की समस्या बढ़ रही है।

नगर पालिका अध्यक्ष से लेकर विधायक तक कई बार वेंडिंग जोन बनाने की घोषणा कर चुके हैं, लेकिन अभी तक एक भी वेंडिंग जोन विकसित नहीं हो पाया है। अतिक्रमण हटाओ अभियान के नाम पर महीने में एक-दो बार रेहड़ी-ठेलियों को हटाया जाता है, लेकिन स्थायी जगह उपलब्ध नहीं होने के कारण व्यापारी फिर उसी स्थान पर ठेलियां लगा देते हैं। शहर के फुटपाथों और सड़क किनारे रेहड़ी-ठेलियां खड़ी होने से दिनभर जाम की स्थिति बनी रहती है।

लाइसेंस से अधिक चल रही हैं ठेलियां- नगर पालिका की ओर से शहर में केवल 80 लोगों को ठेली लगाने का लाइसेंस जारी किया गया है, जबकि यहां डेढ़ सौ से दो सौ तक ठेलियां संचालित हो रही हैं। कुछ लोग ठेली लगाने का कारोबार भी कर रहे हैं और अपनी ठेलियां किराये पर दे रहे हैं। अवैध रूप से संचालित ठेलियों के खिलाफ नगर पालिका कई बार अभियान चला चुकी है, लेकिन इसके बावजूद स्थिति जस की तस बनी हुई है।

अवैध ठेलियों पर अंकुश लगाने के लिए नगर पालिका ने फोटोयुक्त लाइसेंस की व्यवस्था शुरू की थी। इसके तहत प्रत्येक ठेली संचालक को पालिका की ओर से फोटोयुक्त लाइसेंस जारी किया गया था, जिसे ठेली पर लगाना अनिवार्य किया गया था। साथ ही यह व्यवस्था भी बनाई गई थी कि जिस व्यक्ति के नाम पर लाइसेंस जारी होगा, वही ठेली का संचालन करेगा। शुरुआती दिनों में इस व्यवस्था का पालन हुआ, लेकिन अब फोटोयुक्त लाइसेंस लगी ठेलियां भी कहीं नजर नहीं आतीं।

खांसी का इलाज बन सकता है शहद, लेकिन इन 5 बातों का रखें खास ध्यान

खांसी एक आम समस्या है, जिससे हर कोई कभी न कभी गुजरता है। इसे दूर करने के लिए कई लोग शहद का सेवन करते हैं। शहद में कीटाणुओं को रोकने वाले और शरीर के लिए फायदेमंद गुण होते हैं, जो खांसी को कम करने में मदद कर सकते हैं। हालांकि, शहद का उपयोग करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। आइए जानते हैं कि खांसी के लिए शहद का इस्तेमाल करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

शहद का चयन कैसे करें? : खांसी के लिए अच्छा शहद चुनना बहुत जरूरी है। बाजार में कई प्रकार के शहद उपलब्ध हैं, लेकिन सभी एक जैसे नहीं होते। असली और प्राकृतिक शहद ही सबसे ज्यादा असरदार होता है। इसलिए हमेशा भरोसेमंद और प्रमाणित शहद खरीदें। इसके अलावा बिना किसी प्रक्रिया के तैयार किया गया शहद भी अच्छा विकल्प हो सकता है क्योंकि इसमें सभी पोषक तत्व बने रहते हैं।

सही मात्रा में सेवन करें : शहद की मात्रा का ध्यान रखना भी अहम है। जरूरत से ज्यादा शहद खाने से नुकसान हो सकता है। आमतौर पर एक चम्मच शहद रोजाना पर्याप्त होता है। इसे खाली पेट या हल्के गुनगुने पानी में मिलाकर लिया जा सकता है। इससे आपके शरीर को जरूरी पोषक तत्व मिलेंगे और खांसी में भी राहत मिलेगी। इसके अलावा शहद का सीमित सेवन करने से आपको अधिक लाभ होगा और आप स्वस्थ रहेंगे।

बच्चों के लिए विशेष सावधानी बरतें : बच्चों के लिए शहद का सेवन करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। एक साल से छोटे बच्चों को शहद न दें क्योंकि इसमें कुछ हानिकारक तत्व हो सकते हैं, जो उनके लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। इसके अलावा छोटे बच्चों की खांसी का इलाज करने से पहले हमेशा डॉक्टर से सलाह लें ताकि उनकी सेहत पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। बच्चों की सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है, इसलिए उन्हें शुद्ध और सुरक्षित खाद्य पदार्थ ही दें।

गर्भवती महिलाओं के लिए क्या है सही? : गर्भवती महिलाओं को भी शहद का सेवन करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। गर्भावस्था के दौरान शरीर में कई बदलाव होते हैं, जिससे महिला की सेहत प्रभावित हो सकती है। इसलिए गर्भवती महिलाओं को सलाह दी जाती है कि वे अपने डॉक्टर या पोषण विशेषज्ञ से परामर्श लेकर ही किसी भी प्रकार का आहार परिवर्तन करें। इसके अलावा वे अपनी डाइट में शहद शामिल करने से पहले उसकी मात्रा और गुणवत्ता पर ध्यान दें।

डॉक्टर की सलाह लें : अगर आपकी खांसी लंबे समय तक ठीक नहीं होती या बहुत ज्यादा परेशान कर रही हो, तो डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। शहद एक प्राकृतिक उपाय हो सकता है, लेकिन यह हर स्थिति में कारगर नहीं होता। डॉक्टर आपकी समस्या का सही निदान कर सकते हैं और उचित इलाज बता सकते हैं। इस प्रकार इन बातों का ध्यान रखकर आप सुरक्षित तरीके से शहद का उपयोग करके अपनी खांसी को कम कर सकते हैं।

बच्चे को पाउडर लगाने से पहले जान लें ये जरूरी बातें

बच्चों की देखभाल करते समय माता-पिता कई चीजों का ध्यान रखते हैं। इनमें से एक है पाउडर का इस्तेमाल। पाउडर का उपयोग बच्चों की त्वचा को ताजगी देने और पसीने को सोखने में मदद करता है। हालांकि, पाउडर का उपयोग करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि बच्चे की त्वचा को कोई नुकसान न पहुंचे। आइए जानते हैं कि बच्चों के लिए पाउडर का उपयोग करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

पाउडर का चयन करते समय रखें इन बातों का ध्यान : बच्चे के लिए पाउडर खरीदते समय उसकी सामग्री पर ध्यान दें। ऐसे पाउडर चुनें, जिनमें प्राकृतिक तत्व हों और किसी भी तरह के हानिकारक रसायन न हों। टैल्कम पाउडर से बचें क्योंकि इसमें टैल्क नामक तत्व होता है, जो सांस की समस्या पैदा कर सकता है। इसके बजाय मक्के के आटे पर आधारित पाउडर का चयन करें, जो सुरक्षित और प्राकृतिक होता है। इसके अलावा खुशबू वाले पाउडर लेने से भी बचें।

नहाने के बाद ही पाउडर का करें इस्तेमाल : बच्चे की त्वचा को ताजगी देने के लिए पाउडर का इस्तेमाल नहाने के बाद करना चाहिए। नहाने से पहले पाउडर न लगाएं क्योंकि इससे त्वचा की स्वाभाविक नमी खत्म हो सकती है। नहाने के बाद जब त्वचा हल्की गीली होती है, तब पाउडर लगाने से वह अच्छी तरह अवशोषित हो जाता है और त्वचा को सूखा और ताजगी भरा महसूस होता है। इससे पसीना भी आसानी से सोख लिया जाता है।

सही मात्रा में ही लगाएं पाउडर : पाउडर लगाने की मात्रा बहुत जरूरी है। ज्यादा मात्रा में पाउडर लगाने से बच्चे की त्वचा पर चकत्ते हो सकते हैं या खुजली हो सकती है। हमेशा जरूरत के हिसाब से ही पाउडर लगाएं। थोड़ी मात्रा में पाउडर लगाना ही काफी होता है ताकि वह अच्छी तरह फैल सके और पूरी तरह से अवशोषित हो जाए। इससे बच्चे की त्वचा सूखी रहती है और पसीना भी आसानी से सोख लिया जाता है।

आंखों और मुंह से दूर रखें : पाउडर लगाते समय ध्यान रखें कि वह बच्चे की आंखों और मुंह से दूर रहे। अगर पाउडर आंखों में चला जाए तो जलन हो सकती है और मुंह में जाने पर असुविधा हो सकती है। इसके लिए पहले हाथों पर थोड़ी मात्रा में पाउडर लें, फिर उसे धीरे-धीरे बच्चे की पीठ, गर्दन और अन्य हिस्सों पर लगाएं। इस तरह पाउडर सही तरीके से लगेगा और बच्चे की त्वचा भी सुरक्षित रहेगी।

अगर वेट लॉस के लिए रोज पी रहे हैं जूस तो ठहर जाएं, कहीं ये आपकी गलती तो नहीं



आजकल भागदौड़ भरी जिंदगी में हेल्थ पर ध्यान दे पाना सबसे चुनौती का काम है। अनहेल्दी खानपान और अस्त-व्यस्त लाइफस्टाइल की वजह से मोटापा और कई तरह की समस्याएं होने लगती है। शरीर का वजन बढने से कई बीमारियां घेर लेती हैं। इसलिए वजन कम करने पर ज्यादा फोकस करने की सलाह दी जाती है। इसके लिए डाइट और एक्सरसाइज के साथ-साथ हेल्दी लाइफस्टाइल को फॉलो करना चाहिए। बहुत से लोग फ्रूट जूस पीकर वेट लॉस करने की कोशिश करते हैं, जो गलत तरीका माना जाता है। ऐसे में आइए जानें कि मोटापा कम करने के लिए फलों का सेवन किस तरह करना चाहिए।

वजन कम करने में जूस की भूमिका

बहुत से लोग वजन कम करने के लिए जूस पीना पसंद करते हैं। फलों,सब्जियों और हर्ब्स के साथ मसालें और आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां मिलाकर कई तरह के वेट लॉस जूस बनाए जाते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, बहुत से लोग इसी गलतफहमी में रहते हैं कि फलों का जूस पीकर वे अपना वजन कम कर सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि वेट लॉस में फ्रूट जूस पीने से नुकसान भी हो सकते हैं।

फ्रूट जूस पीने से क्यों नहीं कम होता वजन

कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि फ्रूट जूस पीने से शरीर का वजन बढ़ सकता है। जिसका सेहत पर गंभीर असर पड़ सकता है। अध्ययनों के अनुसार, ऐसे लोग जो लिक्विड डाइट लेते हैं या सिर्फ फ्रूट जूस ही पीते हैं, उन्हें कुछ समय बाद मोटापा घेर सकता है।बच्चों में मोटापे का जोखिम ज्यादा होता है। अब सवाल कि हेल्दी होने के बावजूद फ्रूट जूस पीने से वजन क्यों बढ़ता है तो बता दें कि फलों में फ्रूक्टोज नाम का नेचुरल शुगर पाया जाता है, जो फलों का स्वाद मीठा बनाता है। फलों का जूस निकालने के बाद भी ये नेचुरल शुगर जूस में ही रह जाती है और इसे पीने से कैलोरी बढ़ जाती है। ये कैलोरी पेट में फैट बनकर जमा हो जाती है, जिससे वजन बढ़ता रहता है।

हेल्थ एक्सपर्ट्स के अनुसार, फ्रूट जूस पीने की बजाय फलों को काटकर खाना ज्यादा फायदेमंद होता है। जब फलों का जूस निकाला जाता है तब उन्हें पीसा या कुचला जाता है और फिर छानकर अलग कर लिया जाता है। इससे फलों में मौजूद फाइबर अलग हो जाता है। डाइटरी फाइबर शरीर का मेटाबॉलिज्म बढ़ाकर वेट लॉस में मदद करता है। यही कारण है कि जूस पीने से फाइबर के फायदे नहीं मिल पाते हैं।

सेहत को फायदे पहुंचाने वाले खीरे के कई नुकसान भी होते हैं!

इस बात से तो हम सब अच्छे से वाकिफ है कि खीरे खाना हमारी सेहत के लिए फायदेमंद होता है। वह भी खासकर के गर्मियों के मौसम में, इसे डाइट में शामिल करने से हमें तमाम फायदे मिलते हैं, पर क्या आप जानते हैं कि सेहत को इतने फायदे पहुंचाने वाला खीरे के कई नुकसान भी होते हैं। कई लोग डाइटिंग के चलते या वैसे ही दिनभर में 8-10० खीरा खा लेते हैं। वैसे तो यह हमारी सेहत के लिए फायदेमंद होता है, लेकिन जरूरत से ज्यादा इसका सेवन करना हमारे लिए जहर के समान भी हो सकता है। कभी भी खीरे को रात के समय खाने की भून न करें। इसे लेकर आपने एक स्थानीय कहावत भी सुनी होगी जो इस प्रकार है, सुबह को हीरा, दिन में खीरा और रात में पीड़ा। इसका मतलब है कि सुबह के समय खीरा खाना शरीर के लिए सबसे अधिक लाभकारी होता है, दिन में इसका सेवन करने के सामान्य फायदे हैं, जबकि रात में इसका सेवन हानिकारक और पीड़ादायी है। खीरे में कुकुर्बिटाइन्स नामक विषैला यौगिक तत्व पाया जाता है। आप जितना ज्यादा खीरा खाएंगे, उतनी ही अधिक मात्रा में यह टॉक्सिक आपके शरीर में जायेगा। इसके कारण आपके लीवर, अग्नाशय, पित्त मूत्राशय और गुर्दा सहित शरीर के कई अन्य अंगों में सूजन हो सकती है। इसलिए इसका सेवन संतुलित मात्रा में ही करें।

शब्द सामर्थ्य -65

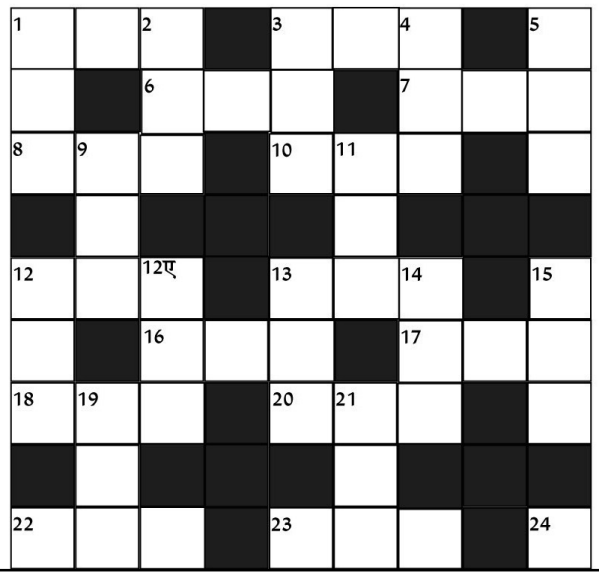
(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।



शब्द सामर्थ्य क्रमांक 64 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

आलिया भट्ट ने छठी क्लास में शुरू कर दी थी डेटिंग!

एक्ट्रेस आलिया भट्ट पॉपुलर चैट शो कॉफी विद करण में कई बार आ चुकी हैं। हालांकि, उन्होंने इस चैट शो में 2013 में अपने स्टूडेंट ऑफ द ईयर के को-स्टार्स सिद्धार्थ मल्होत्रा और वरुण धवन के साथ डेब्यू किया था। इस एंटरटेनिंग एपिसोड के दौरान, आलिया ने होस्ट और फिल्ममेकर करण जौहर समेत सभी को चौंका दिया, क्योंकि उन्होंने बताया कि उन्होंने क्लास 6 में डेटिंग शुरू कर दी थी। करण ने कहा कि वरुण ने उन्हें बताया कि आलिया के बचपन में कई यंग बॉयफ्रेंड थे। हालांकि, इस पर मजाकिया अंदाज में आपत्ति जताते हुए आलिया ने कहा, मैं इसे कोई सिलसिला नहीं कहूंगी, लेकिन मेरे (बॉयफ्रेंड) और सीरियस रिलेशनशिप थे, जैसे दो साल, (फिर) दो साल। करण ने इस बात पर हैरानी जताई कि आलिया 17 साल की उम्र तक दो सीरियस रिलेशनशिप में रह चुकी थीं। करण जौहर ने पूछा, आपने 10 साल की उम्र में डेटिंग शुरू कर दी थी? आलिया ने हंसकर जवाब देते हुए कहा, इसीलिए मैं कहती हूं कि यह कोई डोरी नहीं है। मैंने छठी क्लास में डेटिंग शुरू कर दी थी। जब हैरान करण ने उनसे पूछा, क्या?, आलिया ने जवाब दिया, लेकिन, जाहिर है कि यह डेटिंग नहीं थी। यह तो बस ऐसा था, जैसे हम क्लासरूम की दूसरी तरफ से एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते थे। वरुण ने फिर मजाक में कहा कि यह आधा-आधा था, जिस पर आलिया ने कहा, कुछ भी आधा-अधूरा नहीं था। असल में मेरा पहला बॉयफ्रेंड 10वीं क्लास में था। यह बताते हुए कि यह एक सीरियस रिलेशनशिप था, आलिया ने कहा, क्योंकि मैंने उसे दो साल तक डेट किया। वह मेरा पहला, हाई-स्कूल जैसा प्यार था। करण ने आलिया से यह भी पूछा कि क्या उन्होंने उन्हें इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि वह एक्टर बनना चाहती थीं। इस बात से इनकार करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, नहीं, उन्होंने मुझे छोड़ दिया। आलिया की लव लाइफ की बात करें तो उन्होंने कुछ समय तक डेटिंग करने के बाद 14 अप्रैल, 2022 को एक्टर रणबीर कपूर से शादी कर ली। नवंबर 2022 में इस लवबर्ड्स ने अपनी बेटी राहा कपूर का स्वागत किया।

मुकुथी अम्मान 2 : महाशक्ति बनकर अलौकिक रूप में छाईं नयनतारा

दक्षिण भारतीय सिनेमा की चर्चित अभिनेत्री नयनतारा अपनी आगामी फिल्म मूकुथी अम्मन 2' के साथ दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं। भक्ति और मनोरंजन से भरपूर इस फिल्म की रिलीज तारीख का निर्माताओं ने ऐलान कर दिया है। सुंदर सी. के निर्देशन में बनी यह फिल्म दिवाली के अवसर पर 6 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म के टीज़र को दर्शकों की ओर से अच्छी प्रतिक्रिया मिलने की जानकारी भी सामने आई है। मूकुथी अम्मन 2' वर्ष 2010 में आई फिल्म मूकुथी अम्मन' की अगली कड़ी है। फिल्म को लेकर दर्शकों में उत्सुकता बनी हुई है। इसका तेलुगु संस्करण महाकाली' नाम से रिलीज किया जाएगा। निर्माताओं को उम्मीद है कि धार्मिक और मनोरंजक विषय के मेल वाली यह फिल्म त्योहार के दौरान दर्शकों को आकर्षित करेगी। फिल्म में नयनतारा के साथ रेजिना कैसेंड्रा, दुनिया विजय, योगी बाबू और उर्वशी भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का निर्माण डॉ. इशारी के. गणेश अपने बैनर वेल्स फिल्म इंटरनेशनल' के तहत कर रहे हैं। संगीत की जिम्मेदारी हिप-हॉप तमिलहा आदि ने संभाली है। फिल्म के टीज़र को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया के बाद अब दर्शकों की नजर इसकी रिलीज पर है। दिवाली के मौके पर सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली इस फिल्म से निर्माताओं को अच्छी उम्मीदें हैं। नयनतारा के आगामी प्रोजेक्ट को लेकर भी फिल्म जगत में चर्चा है। बताया जा रहा है कि वह निर्देशक वामसी पैदिपल्ली की फिल्म में सलमान खान के साथ नजर आएंगी। इस परियोजना का संभावित नाम मॉन्स्टर' बताया जा रहा है, हालांकि शीर्षक को लेकर आधिकारिक पुष्टि का इंतजार है। नयनतारा के इस प्रोजेक्ट ने भी प्रशंसकों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है।

हॉरर फिल्म काली खेती 20 नवंबर को सिनेमाघरों में होगी प्रदर्शित

अभिनेता जैकी श्रॉफ और शरद केलकर की आगामी हॉरर-रोमांचक फिल्म काली खेती' का टीजर जारी कर दिया गया है। हारिस इम्तियाज खान के लेखन और निर्देशन में बनी यह फिल्म ग्रामीण परिवेश में डर की एक अनूठी कहानी पेश करेगी। फिल्म में जैकी श्रॉफ और शरद केलकर के साथ नेहा सरगम मुख्य अभिनेत्री के रूप में नजर आएंगी। फिल्म का निर्माण सना खान ने ब्लैक कैनवस स्टूडियो के बैनर तले किया है। इसकी कहानी कृषि और ग्रामीण जीवन को भय तथा रहस्य के नजरिये से प्रस्तुत करती है। टीजर की शुरुआत एक ऐसे गांव से होती है, जहां रात का अंधेरा फैलते ही एक रहस्यमयी और डरावनी शक्ति जाग उठती है। यह शक्ति इंसानी नहीं है और उसके प्रभाव से गांव के खेतों में अजीब घटनाएं होने लगती हैं। कहानी में दिखाया गया है कि खेत रहस्यमयी तरीके से लोगों का खून पीने लगते हैं, जिससे पूरे गांव में भय का माहौल बन जाता है। फिल्म में जैकी श्रॉफ का किरदार इस शैतानी ताकत के रहस्य का पता लगाने की जिम्मेदारी उठाता है। टीजर में पारिवारिक इतिहास, पुश्तैनी अभिशाप और जमीन के नीचे दफन खौफनाक रहस्यों की झलक दिखाई गई है। ग्रामीण परिवेश में बुनी गई यह कहानी दर्शकों को डर और रोमांच से भरपूर अनुभव देने का प्रयास करेगी।

काली खेती' 20 नवंबर 2026 को देशभर के सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी।

फातिमा सना शेख का सिजलिंग एथनिक लुक वायरल, सिल्क साड़ी में ढाया कहर



बॉलीवुड की खूबसूरत अदाकारा फातिमा सना शेख अपनी शानदार एक्टिंग के साथ-साथ अपने कमाल के फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं। हाल ही में फातिमा ने इंस्टाग्राम पर अपने नए फोटोशूट की कुछ बेहद ही दिलकश तस्वीरें शेयर की हैं, जिन्होंने सोशल मीडिया का पारा चढ़ा दिया है।

पारंपरिक भारतीय परिधान साड़ी को जिस आत्मविश्वास, सिज़लिंग अंदाज़ और आधुनिकता के साथ फातिमा ने कैरी किया है, वह देखने लायक है। तस्वीरों में फातिमा सना शेख पिस्ता ग्रीन रंग की बेहद खूबसूरत सिल्क साड़ी में नजर आ रही हैं। साड़ी पर बारीक गोल्ड ज़री, सेक्विन वर्क और एथनिक फ्लोरल मोटिफ्स की एम्ब्रॉयडरी की गई है।

साड़ी को एक ग्लैमरस ट्विस्ट देने के लिए फातिमा ने इसके साथ गहरे मैरून और गोल्डन ज़री की सघन एम्ब्रॉयडरी वाला स्लीवलेस ब्लाउज पेयर किया है। इस ब्लाउज की डीप प्लंजिंग स्वीटहार्ट नेकलाइन और कट-वर्क डिज़ाइन उनके एथनिक लुक में बोल्डनेस और हॉटनेस का तड़का लगा रहा है।

किसी तस्वीर में फातिमा कैमरे की ओर साइड-प्रोफाइल दिखाते हुए अपनी टोन्ड बैक और बैकलेस ब्लाउज की खूबसूरती को फ्लॉन्ट कर रही हैं। तो किसी तस्वीर में वह अपनी झुकी हुई निगाहों और उंगलियों से बालों को संवारते हुए क्लोज़-अप पोज़ दे रही हैं।

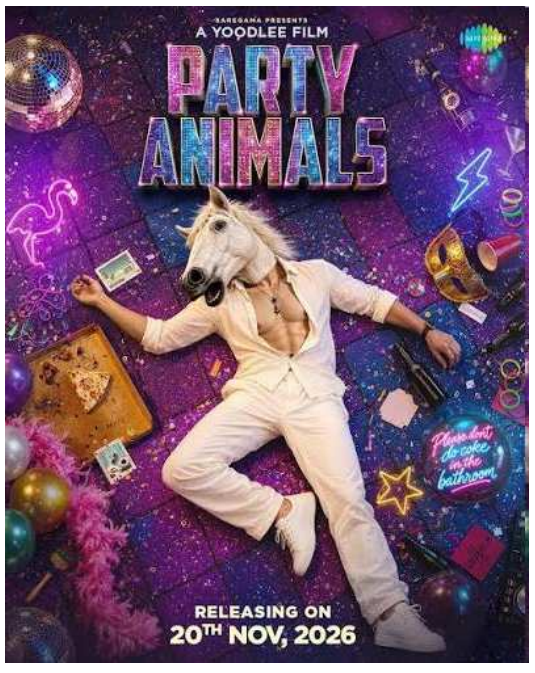
फातिमा ने अपने इस एथनिक ग्लैमरस लुक को पूरा करने के लिए मिनिमल लेकिन बेहद प्रभावशाली मेकअप का चुनाव किया है। बालों के लिए उन्होंने मिडल-पार्टेड सॉफ्ट ओपन वेव्स हेयरस्टाइल चुना है, जो उनके कंधों पर बहते हुए उनके लुक को एक रॉयल और ड्रीमी वाइब दे रहा है।

ज्वेलरी की बात करें तो फातिमा ने गले को खाली रखते हुए ध्यान सिर्फ अपने ईयररिंग्स पर केंद्रित रखा है। उन्होंने मैरून और पर्ल वर्क वाले हैवी पारंपरिक झूमके, हाथों में स्टेटमेंट कुंदन रिंग और हैवी कड़े पहन रखे हैं।

फातिमा सना शेख की तस्वीरों के कमेंट सेक्शन में फैंस ने तारीफों की झड़ी लगा दी। कोई उनके एक्सप्रेशन्स को किलर बता रहा है। तो कोई उनके एथनिक स्टाइल को परफेक्ट फेस्टिवल एंड वेडिंग इंस्पिरेशन बता रहा है।

मित्रता के बाद अब पार्टी एनिमल्स में नजर आएंगे विराज घेलानी, बोले- फुल-ऑन मस्ती फिल्म है

एक्टर और डिजिटल कंटेंट क्रिएटर विराज घेलानी अपनी नई फिल्म पार्टी एनिमल्स के साथ दर्शकों को हंसाने के लिए तैयार हैं। दोस्ती, मस्ती और गलत फैसलों के चलते एक रात की कहानी पर बनी इस कॉमेडी फिल्म में विराज लीड रोल में नजर आएंगे। एक्टर ने फिल्म को फुल-ऑन मस्ती फिल्म बताया है। उनका कहना है कि इसमें दोस्ती, पागलपन और ऐसे हालात देखने को मिलेंगे, जो हर पल और मजेदार होते जाएंगे। विराज ने फिल्म को लेकर कहा, पार्टी एनिमल्स एक अलग तरह की फिल्म है। यह फुल-ऑन मस्ती फिल्म है। मैं काफी एक्साइटेड हूं कि दर्शक इसे बड़े पर्दे पर देखें। इसमें दोस्ती, पागलपन और ऐसे हालात हैं, जो लगातार और ज्यादा मजेदार होते जाते हैं। फिल्म की दुनिया में काफी एनर्जी है और दर्शक इससे खुद को जोड़ पाएंगे। मैं इंतजार नहीं कर सकता कि सभी इसे सिनेमाघरों में देखें।



यूडली फिल्म्स के बैनर तले बनी पार्टी एनिमल्स की कहानी मुंबई में सेट है। फिल्म में विराज घेलानी, मान पटेल का किरदार निभा रहे हैं, जबकि अर्जुन तनवर अरमान खन्ना के रोल में नजर आएंगे। दोनों बचपन के दोस्त हैं, जो एक रात पार्टी करने के लिए मिलते हैं। लेकिन उनकी यह मुलाकात जल्द ही मुश्किलों में बदल जाती है। रोमांटिक उलझनें, छोटी-छोटी बातों पर झगड़े और बिगड़ी परिस्थितियों को संभालने की उनकी कोशिशें मामले को और उलझा देती हैं।

फिल्म के प्रोड्यूसर सिद्धार्थ आनंद कुमार ने कहा, यह फिल्म बिना किसी झिझक के पागलपन, बेबाकी और अपने ही मजाक को समझने वाले अंदाज में आगे बढ़ती है। हम यह दिखाने की कोशिश नहीं कर रहे कि फिल्म के किरदारों का हर फैसला सही है। असल में, उनके फैसले जितने खराब होते जाते हैं, कहानी उतनी ही मजेदार बनती जाती है। कभी-कभी चीजों को उनके हाल पर छोड़कर पागलपन को आगे बढ़ने देना चाहिए।

रवि छाबड़िया के निर्देशन में बनी इस फिल्म को विक्रम मेहरा और सिद्धार्थ आनंद कुमार ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म की कहानी अली हाजी, खुश मुल्लिक और वीर पंचाल ने लिखी है। इसमें प्रगति नागपाल, नकियाह हाजी, आलम खान, साकिब अयूब, कमलेश सावंत, अनिल चरंजीत, आरोन कौल, विजय पाटकर और मनोज जोशी भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। पार्टी एनिमल्स की कहानी में हॉलीवुड की कॉमेडी फिल्मों द हैंगओवर, सुपरबैड और 21 जंप स्ट्रीट जैसी फिल्मों की झलक देखने को मिलेगी। पार्टी एनिमल्स 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

कुंभ, सप्तऋषि लिंक मार्ग पर गड्ढों का जाल, राहगीर चोटिल

हरिद्वार(आरएनएस)। कुंभ की तैयारियों के बीच उत्तरी हरिद्वार का सप्तऋषि लिंक मार्ग बदहाली का शिकार है। सड़क पर गहरे गड्ढे और पेयजल का रिसाव राहगीरों के लिए मुसीबत बना हुआ है। डीएम मयूर दीक्षित ने 15 अक्तूबर तक गड्ढे भरने के निर्देश दिए थे, लेकिन तय समयसीमा बीतने के बाद भी सड़क की हालत नहीं सुधरी। कुंभ में 51 दिन शेष हैं, इसके बावजूद जिम्मेदार विभाग सड़क को चलने लायक नहीं बना पाए हैं। स्थानीय व्यापारी जनार्दन पांडे और मनोज कुमार ने बताया कि सप्तऋषि लिंक मार्ग कई महीने से क्षतिग्रस्त है। सड़क पर इतने गहरे गड्ढे हैं कि वाहन चालकों को बचकर निकलने के लिए बार-बार रास्ता बदलना पड़ता है। दिन के मुकाबले रात में खतरा और बढ़ जाता है। स्थानीय लोगों के साथ इस मार्ग से गुजरने वाले श्रद्धालुओं को भी परेशानी उठानी पड़ रही है। स्थानीय निवासी महेश कुमार और भूपेंद्र चौहान ने बताया कि गड्ढों के कारण कई लोग चोटिल हो चुके हैं। सड़क पर लगातार पेयजल बह रहा है। पानी भरने से गड्ढों की गहराई का अंदाजा नहीं लग पाता और हादसे का खतरा बना रहता है। पेयजल की बर्बादी के साथ सड़क भी लगातार क्षतिग्रस्त हो रही है। कुंभ की तैयारियों के नाम पर करोड़ों रुपये के निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं, लेकिन उत्तरी हरिद्वार की बुनियादी सुविधाएं ही दुरुस्त नहीं हो पा रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि हरकी पैड़ी और मुख्य बाजारों में तैयारियों के दावे किए जा रहे हैं, जबकि उत्तरी हरिद्वार के कई मार्ग बदहाली से जूझ रहे हैं। सवाल यह है कि जब जिलाधिकारी के निर्देश के बाद भी सड़क के गड्ढे नहीं भरे गए तो कुंभ से पहले व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के दावों पर कैसे भरोसा किया जाए।

सतत मिलाप की टीम ने पूर्व सैनिकों की समस्याएं सुनी

नई टिहरी(आरएनएस)। गढ़वाल राइफल्स की सतत मिलाप टीम ने महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल लंबगांव में पूर्व सैनिकों, वीर नारियों और उनके आश्रितों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। टीम ने पूर्व सैनिकों को विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए उनकी समस्याओं का शीघ्र समाधान का भरोसा दिया।आयोजित कैंप में 21वीं गढ़वाल राइफल्स की टीम ने पूर्व सैनिकों, वीर नारियों और उनके आश्रित बच्चों की छात्रवृत्ति योजना, पेंशन में बढ़ोत्तरी, प्रमाणपत्रों के शुद्धीकरण और जीवन प्रमाणपत्र का सत्यापन संबंधी कार्य किए। टीम के सूबेदार दिनेश सिंह, हवलदार नरेश रमोला और नायक विकास सिंह ने कहा कि सैनिक संगठन पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों की हर छोटी-बड़ी समस्या के समाधान के लिए सदैव तत्पर है।टीम ने देहरादून में एक बुजुर्ग की जान बचाने में अदम्य साहस दिखाने वाली उत्तराखंड गौरव सम्मान से सम्मानित एमडीएस पब्लिक स्कूल लंबगांव की पूर्व छात्रा श्वेता पंवार को भी सम्मानित किया। वह अभी देहरादून में कार्यरत हैं। उन्होंने सड़क पर जा रहे एक बुजुर्ग को बस की चपेट में आने से बचाकर मानवता और साहस की मिसाल पेश की थी। टीम ने कारगिल शहीद वीरेंद्र सिंह चौहान की पत्नी बांसुरी देवी का हालचाल भी जाना। पूर्व सैनिक संगठन के अध्यक्ष युद्धवीर राणा ने मिलाप टीम का आभार जताया।

सू- दोकू क्र.65

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.64 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

स्वच्छता के क्षेत्र में हिमालयी राज्यों में नंबर वन बना रुद्रपुर

◆स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में क्लीन हिमालयन सिटी श्रेणी में हासिल की प्रथम रैंक

नगर संवाददाता

रुद्रपुर। स्वच्छता के क्षेत्र में रुद्रपुर नगर निगम ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर राष्ट्रीय स्तर पर शहर का गौरव बढ़ाया है। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत रुद्रपुर नगर निगम को क्लीन हिमालयन सिटी श्रेणी में हिमालयी राज्यों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इस उपलब्धि के साथ रुद्रपुर ने स्वच्छता के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित भव्य समारोह में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रुद्रपुर नगर निगम को प्रथम पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। यह सम्मान महापौर विकास शर्मा और नगर आयुक्त शिप्रा जोशी पांडे ने प्राप्त किया।



◆राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विज्ञान भवन में महापौर विकास शर्मा और नगर आयुक्त को सौंपा राष्ट्रीय पुरस्कार

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस गौरवपूर्ण समारोह में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, केंद्रीय सचिव सत्येंद्र सिंह, केंद्रीय सचिव दीपा धारा सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। राष्ट्रपति के हाथों राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करना रुद्रपुर के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

क्लीन हिमालयन सिटी श्रेणी में रुद्रपुर को मिली प्रथम रैंक इस बात का प्रमाण है कि शहर में स्वच्छता को एक व्यापक व्यवस्था के रूप में आगे बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। इसके अंतर्गत घरों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से नियमित डोर-टू-डोर कूड़ा संग्रहण, गीले और सूखे कचरे का स्रोत पर पृथक्करण, एकत्रित कचरे का वैज्ञानिक प्रसंस्करण एवं निस्तारण तथा खुले में कूड़ा डालने की प्रवृत्ति पर नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण मानकों का मूल्यांकन किया जाता है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक स्थलों, बाजारों, सामुदायिक क्षेत्रों और अन्य प्रमुख स्थानों की स्वच्छता, नागरिकों की सहभागिता, स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता तथा सफाई मित्रों की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कल्याण को भी विशेष महत्व दिया जाता है। नगर निगम की ओर से किए गए कार्यों के दस्तावेजीकरण, अभिलेखों और जमीनी स्तर पर उनके सत्यापन के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार रुद्रपुर को प्राप्त यह सम्मान शहर की स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए किए गए विभिन्न स्तरों के प्रयासों की राष्ट्रीय स्तर पर मिली पहचान है।

पुरस्कार प्राप्त करने के बाद महापौर विकास शर्मा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हिमालयी राज्यों में रुद्रपुर नगर निगम को प्रथम पुरस्कार मिलना केवल नगर निगम की उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरे शहर और उत्तराखंड प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। यह सम्मान उन सभी लोगों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने रुद्रपुर को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाने में अपना योगदान दिया है।

महापौर ने कहा कि पिछली बार नगर निगम रुद्रपुर ने राष्ट्रीय स्तर पर 467 वी रैंक से छलांग लगाकर 169 वीं रैंक हासिल की थी। इस बार हिमालय राज्यों में प्रथम रैंक हासिल की है। उन्होंने कहा कि इस सम्मान से नगर निगम की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। राष्ट्रीय स्तर पर मिली इस पहचान को बनाए रखने के साथ ही स्वच्छता के मानकों को और बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर काम किया जाएगा। शहर के प्रत्येक वार्ड, मोहल्ले, बाजार और सार्वजनिक स्थल को स्वच्छ एवं व्यवस्थित बनाने के लिए प्रयासों को और गति दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि रुद्रपुर को स्वच्छता के क्षेत्र में मिली यह राष्ट्रीय पहचान एक नई शुरुआत है। लक्ष्य केवल पुरस्कार प्राप्त करना नहीं, बल्कि शहर की स्वच्छता व्यवस्था को स्थायी रूप से मजबूत बनाना, नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना और रुद्रपुर को स्वच्छ, सुंदर एवं विकसित शहर के रूप में स्थापित करना है।

राष्ट्रपति के हाथों मिला यह सम्मान रुद्रपुर के लिए केवल एक पुरस्कार नहीं, बल्कि शहरवासियों के सामूहिक प्रयास, सफाई मित्रों के अथक परिश्रम और स्वच्छ शहर के संकल्प की राष्ट्रीय स्तर पर मिली पहचान है। हिमालयी राज्यों में प्रथम स्थान हासिल कर रुद्रपुर ने स्वच्छता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि अपने नाम दर्ज कराई है।

युवक पर जानलेवा हमले में फरार आरोपी दबोचा

ऋषिकेश(आरएनएस)। युवक पर जानलेवा हमले कर फरार आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पेशी के बाद कोर्ट ने आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया है। कोतवाली पुलिस के मुताबिक शुभम निवासी आईडीपीएल कॉलोनी, ऋषिकेश ने 15 अक्तूबर को तहरीर दी थी, जिसमें बैराज कॉलोनी में संजय टैगोर की दुकान में शराब बेचने की सूचना पुलिस को देने पर पाठल और कुल्हाड़ी से हमला होने की बात कही थी। नामजद तहरीर पर पुलिस ने संजय टैगोर उर्फ संजीव कुमार को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। जबकि, दूसरा आरोपी जुगल किशोर निवासी पुरानी जाटव बस्ती, ऋषिकेश फरार चल रहा था।पुलिस टीम ने आरोपी जुगल किशोर को लक्कड़घाट रोड से दबोच लिया। एसएसआई नवीन जोशी ने बताया कि मामले में अज्ञात लोग भी है, जिनकी पहचान कर पुलिस धरपकड़ के प्रयास में जुटी है।

खच्चरों की लीद और पिरूल से बनेंगे बायोमास पेलेट

रुद्रप्रयाग(आरएनएस)। केदारनाथ यात्रा मार्ग पर खच्चरों की लीद के निस्तारण के लिए सोनप्रयाग में खच्चरों की लीद और पिरूल से बायोमास पेलेट बनाने की इकाई स्थापित की गई है। जिला प्रशासन के अनुसार पहली बार इस तरह की पहल की गई है। जिलाधिकारी विशाल मिश्रा ने इकाई का निरीक्षण कर इसकी कार्यप्रणाली देखी। इकाई में तैयार पेलेट से केदारनाथ में श्रद्धालुओं के लिए लगाए गए हॉट वॉटर जनरेटर के माध्यम से 24 घंटे निशुल्क गर्म पानी उपलब्ध कराया जाएगा। जल्द लिंचोली और गौरीकुंड में भी हॉट वॉटर जनरेटर स्थापित किए जाएंगे।इन बायोमास पेलेट (कोयला) का इस्तेमाल हॉट वॉटर बॉयलर और ढाबों को उपलब्ध कराए जाने वाले फायर स्टोव में भी होगा। इससे गैस और डीजल की खपत कम करने में मदद मिलेगी। उत्तराखंड के उद्योगों की फर्नेस में भी इनके इस्तेमाल की योजना है। हालांकि फिलहाल इकाई बड़े पैमाने पर उत्पादन करने में सक्षम नहीं है।

एनजीओ हाईफीड ने उत्तराखंड पर्यटन विभाग के सहयोग और जिला प्रशासन, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी कार्यालय व वन विभाग के समन्वय से यह इकाई स्थापित की है। हाईफीड के निदेशक उदित घिल्डियाल ने बताया कि यात्रा में यात्रियों की भीड़ के कारण सोनप्रयाग में इकाई और केदारनाथ में हॉट वॉटर जनरेटर स्थापित करने में कठिनाइयां आईं। मगर अब बायोमास पेलेट से समस्या का समाधान होगा। जल्द ही लिंचोली और गौरीकुंड में भी हॉट वॉटर जनरेटर स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि यह बायोमास पेलेट कार्बन न्यूट्रल ईंधन विकल्प के रूप में विकसित किए गए हैं। इनका इस्तेमाल हॉट वॉटर बॉयलर के साथ यात्रा मार्ग के ढाबों को उपलब्ध कराए जाने वाले विशेष फायर स्टोव में भी किया जाएगा। इससे गैस और डीजल की खपत कम करने में मदद मिलेगी. इसके अलावा उत्तराखंड में स्थापित विभिन्न उद्योगों की भट्टियों में भी इन पेलेट के इस्तेमाल की संभावनाएं भी तलाशी जा रही है।

कुत्ते के काटने पर पति पत्नी पर मुकदमा

संवाददाता

देहरादून। कुत्ते के काटने पर पति पत्नी पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार उमेद पुर विासरी नीलम ने बसंत विंहार थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उनके पडोस में रहने वाले राम लखन व नीशु के द्वारा पाले गये कुत्ते के द्वारा उसके पांच वर्ष के बेटे को काट लिया। जिसका ईलाज कराया जा रहा है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

घर के बाहर से स्कूटी चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने घर के बाहर से स्कूटी चोरी कर ली। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार नेशनल रोड निवासी मनोज कुमार ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसने अपनी स्कूटी घर के बाहर खडी की थी। लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसकी स्कूटी अपने स्थान से गायब थी। स्कूटी की डिग्गी में उसका हेलमेंट व 46 रूपये रखे हुए थे। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

'महामंथन' में हैट्रिक के लिए...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

मंत्री राजनाथ सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत करीब एक दर्जन केंद्रीय नेताओं के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा रही है। 15 नवंबर को मसूरी में राम माधव और महेंद्र भट्ट की मौजूदगी में होने वाली बैठक में दिसंबर के संगठनात्मक कार्यक्रमों और विधानसभा स्तर पर त्रिदेव सम्मेलनों की रणनीति को अंतिम रूप दिया जाएगा। इसके बाद हरिद्वार की विस्तारित कार्यसमिति में चुनावी रोडमैप पर मुहर लगाई जाएगी।

दरअसल, भाजपा की यह पूरी कवायद 2027 के चुनाव को लेकर पार्टी की गंभीरता का संकेत है। केंद्रीय नेतृत्व ने लक्ष्य बड़ा रखा है, संगठन को मैदान में उतार दिया गया है और सरकार की उपलब्धियों को चुनावी मुद्दा बनाने की तैयारी है। लेकिन चुनावी गणित केवल संगठनात्मक बैठकों और केंद्रीय नेताओं की रैलियों से नहीं बनता। उत्तराखंड में बेरोजगारी, पलायन, पहाड़ की बदहाल स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार के आरोप और राजधानी गैरसैंण जैसे सवाल अब भी राजनीतिक विमर्श के केंद्र में हैं। कांग्रेस इन मुद्दों पर सरकार को घेरने की तैयारी कर रही है। क्षेत्रीय दल भी अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रहे हैं।

भाजपा के लिए असली परीक्षा यह होगी कि वह इन सवालों का जवाब कैसे देती है। क्या धामी सरकार की उपलब्धियां सत्ता विरोधी असंतोष पर भारी पड़ेंगी? क्या संगठन कमजोर सीटों पर अपनी पकड़ मजबूत कर पाएगा? और क्या मौजूदा विधायकों के प्रति जनता की नाराजगी को चुनाव से पहले दूर किया जा सकेगा?हरिद्वार में होने वाला महामंथन भाजपा की चुनावी तैयारी की दिशा तो तय करेगा, लेकिन 65 पार का सपना पूरा होगा या सत्ता विरोधी असंतोष पार्टी की हैट्रिक पर भारी पड़ेगा, इसका फैसला अंतत: उत्तराखंड की जनता ही करेगी।

दो दशक बाद फिर 'सवाल'....

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

राजनीतिक पहलू यही है। हरक सिंह रावत आज कांग्रेस में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वह अंकिता भंडारी हत्याकांड में कथित वीआईपी की पहचान और कार्रवाई को लेकर भाजपा सरकार पर लगातार हमलावर हैं। कांग्रेस ने उन्हें चुनाव प्रबंधन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी सौंपी है। अब जेनी प्रकरण की वापसी ने उनके सामने असहज स्थिति पैदा कर दी है। भाजपा को कांग्रेस के इस वरिष्ठ नेता को घेरने का अवसर मिल गया है। वहीं कांग्रेस इसे राजनीतिक प्रतिशोध बताकर अपने नेता के बचाव में उतर रही है। 11 नवंबर को असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा से जेनी की मुलाकात ने मामले को और राजनीतिक रंग दे दिया है। सरमा का समर्थन मिलने के बाद यह विवाद उत्तराखंड की सीमाओं से बाहर भी चर्चा में आ गया है।

उत्तराखंड में 2027 का चुनाव अब दूर नहीं है। भाजपा हैट्रिक की तैयारी में है और कांग्रेस सत्ता में वापसी के लिए जमीन तलाश रही है। ऐसे में पुराने विवादों का फिर सामने आना महज संयोग मानना मुश्किल है। अंकिता भंडारी प्रकरण पहले से ही प्रदेश की राजनीति का संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है। अब जेनी प्रकरण ने कांग्रेस को भी जवाब देने की स्थिति में ला खड़ा किया है। लेकिन इस पूरे विवाद में दोनों दलों की राजनीति पर भी सवाल उठना चाहिए। जब महिला न्याय मांगती है तो क्या उसकी आवाज केवल तब महत्वपूर्ण होती है, जब उससे विपक्ष को सत्ता पर हमला करने का अवसर मिले? और जब मामला अपने राजनीतिक खेमे से जुड़ता है तो क्या वही आवाज अचानक राजनीतिक साजिश बन जाती है?

जेनी प्रकरण की असली परीक्षा राजनीतिक बयानबाजी नहीं, निष्पक्ष जांच है। 23 साल पुराने मामले में यदि नए तथ्य या साक्ष्य सामने आते हैं तो उनकी कानूनी जांच होनी चाहिए। हरक सिंह रावत को भी पुराने निष्कर्षों के आधार पर अपना पक्ष रखने का अधिकार है। लेकिन किसी भी पक्ष की राजनीतिक सुविधा न्यायिक प्रक्रिया से ऊपर नहीं हो सकती। उत्तराखंड की राजनीति में महिलाओं से जुड़े मामलों पर दोहरा रवैया अब बड़ा सवाल बनता जा रहा है। अंकिता भंडारी प्रकरण हो या जेनी प्रकरण, राजनीतिक दलों की प्राथमिकता न्याय होनी चाहिए, न कि एक-दूसरे को घेरने का अवसर। 23 साल पहले यह मामला हरक सिंह रावत की कुर्सी ले गया था। अब 2027 से पहले उनकी राजनीतिक विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर रहा है। लेकिन इस बार असली फैसला न भाजपा की बयानबाजी करेगी, न कांग्रेस का बचाव। फैसला तथ्यों, साक्ष्यों और निष्पक्ष जांच से ही होना चाहिए।

शातिर वाहन चोर गिरफ्तार, दस बाइक बरामद

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। वाहन चोरी मामलों का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक शातिर को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी निशानदेही पर चुरायी गयी दस बाइक बरामद हुई है। आरोपी स्मैक के नशे की लत पूरी करने के लिए वाहन चोरी की घटनाओं को अंजाम देता था।



कोतवाली बहादराबाद पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस टीम ने चेकिंग के दौरान एक शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर चोरी की कुल 10 मोटरसाइकिलें बरामद की हैं। इनमें से 5 मोटरसाइकिलें थाना बहादराबाद में पंजीकृत वाहन चोरी के 5 मुकदमों से संबंधित पाई गई हैं। इस कार्रवाई से वाहन चोरी की पांच घटनाओं का सफल अनावरण हुआ है।

जानकारी के अनुसार बीते रोज कोतवाली बहादराबाद पुलिस ने क्षेत्र में चैकिंग अभियान चलाया हुआ था। इसी दौरान लोहे के पुल के पास गंगनहर की ओर जंगल से आने वाले एक सुनसान कच्चे रास्ते से एक मोटरसाइकिल सवार संदिग्ध व्यक्ति आता दिखाई दिया। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए मोटरसाइकिल सवार को रोककर पूछताछ की और आवश्यक जांच के लिए उसे मोटरसाइकिल सहित हिरासत में ले लिया।

पूछताछ के दौरान व्यक्ति ने अपना नाम दीपक पुत्र सुंदर लाल, निवासी ग्राम तेलीवाला रसूलपुर, थाना पिरान कलियर, जनपद हरिद्वार बताया। पुलिस द्वारा मोटरसाइकिल के संबंध में वैध दस्तावेज मांगे जाने पर वह कोई कागजात प्रस्तुत नहीं कर पाया। सख्ती से पूछताछ करने पर आरोपी ने स्वीकार किया कि उक्त मोटरसाइकिल उसने आराध्या नर्सिंग होम, बहादराबाद के पास से चोरी की थी। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह स्मैक के नशे का आदी है और अपनी नशे की लत पूरी करने के लिए मोटरसाइकिल चोरी की घटनाओं को अंजाम देता था। चोरी की मोटरसाइकिलों को वह गंगनहर किनारे जंगल में सुनसान स्थान पर झाड़ियों के बीच छिपाकर रखता था, ताकि किसी को उन पर संदेह न हो। आरोपी से गहन पूछताछ एवं उसकी निशानदेही पर पुलिस टीम गंगनहर किनारे जंगल में पहुंची, जहां झाड़ियों में छिपाकर रखी गई 9 अन्य मोटरसाइकिलें बरामद की गईं।

यमुनोत्री यात्रा से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मिली करोड़ो की संजीवनी

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। यमुनोत्री धाम की इस वर्ष की यात्रा आस्था के साथ-साथ यमुनाघाटी की स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी बड़ी सौगात साबित हुई। करीब 204 दिनों तक चले यात्रा सीजन में 8 लाख 85 हजार श्रद्धालुओं ने मां यमुना के दर्शन किए। श्रद्धालुओं की रिकॉर्ड आमद से यात्रा से जुड़े कारोबार का आंकड़ा करीब 87.50 करोड़ रुपये तक पहुंच गया।



यात्रा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े करीब सात हजार पंजीकृत मजदूरों को रोजगार मिला। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक मजदूर की औसत कमाई करीब सवा लाख रुपये रही। इससे घोड़ा-खच्चर संचालकों, डंडी-कंडी संचालकों, कुलियों के साथ होटल, ढाबा, प्रसाद, पूजा सामग्री और स्थानीय दुकानों के कारोबार को भी गति मिली। यात्रा सीजन के दौरान जिला पंचायत को कुली एजेंसी के माध्यम से करीब तीन करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। वहीं यमुनोत्री मंदिर समिति की आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दानपात्र और रसीद बुकों के माध्यम से समिति को करीब 90 लाख रुपये की आय हुई, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 52 लाख रुपये से अधिक था। इस तरह समिति की आय में पिछले वर्ष की तुलना में करीब 38 लाख रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इस वर्ष यमुनोत्री धाम के कपाट 19 अप्रैल को श्रद्धालुओं के लिए खुले थे और 11 नवंबर को भैयादूज के अवसर पर शीतकाल के लिए बंद हुए। करीब पौने सात महीने चले यात्रा सीजन में श्रद्धालुओं की लगातार आमद से यमुनाघाटी के बाजारों में भी रौनक बनी रही और यात्रा आधारित स्थानीय कारोबार को व्यापक लाभ मिला।

आशा स्वास्थ्य कार्यकत्रियों ने धरना देकर स्वास्थ्य महानिदेशक को ज्ञापन भेजा

संवाददाता

देहरादून। सात सूत्री मांगों को लेकर आशा स्वास्थ्य कार्यकत्रियों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय पर धरना देकर स्वास्थ्य महानिदेशक को ज्ञापन प्रेषित किया।



आज यहां उत्तराखण्ड आशा स्वास्थ्य कार्यकत्री यूनियन के बैनर तले आशा कार्यकत्रियों ने चन्दन नगर स्थित मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय चन्दन नगर पर धरना दिया। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य महानिदेशक को ज्ञापन प्रेषित किया। ज्ञापन में उन्होंने कहा कि यूनियन के द्वारा तीन मार्च 2024 को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा मानदेय बढाने का वायदा किया गया था उनके द्वारा आज तक भी मानदेय नहीं बढाया गया है। साथ ही अन्य मांगों पर भी कोई कार्यवाही नहीं की गयी है। जबकि यूनियन द्वारा इस दौरान कई आन्दोलन किये गये किन्तु कोई भी कार्यवाही नही की गयी है। उन्होंने मांग की है कि आशा कार्यकत्रियों का मानदेय तीन हजार प्रतिमाह व 10 प्रतिशत इन्सेन्टिव प्रति माह स्वास्थ्य विभाग के द्वारा भुगतान किया जाता है किन्तु अब उक्त भुगतान को राष्ट्रिय स्वास्थ्य मिशन से करवाने के आदेश किये गये हैं जिसका आशा वर्कस पुरजोर विरोध करती है मानदेय व इन्सेन्टिव को पूर्व की भांति स्वास्थ्य विभाग द्वारा ही दिया जाये। उन्होंने कहा कि आशा कार्यकत्रियों को भी कर्मचारी भविष्य निधि एवं ईएसआई की सुविधा प्रदान की जाये। उन्होंने कहा कि श्रमिक विरोधी चार श्रम संहिताओं को श्रमिक विरोधी प्रावधानों में शंसोधन करने का अधिकार राज्य सरकार को है, इन श्रमिक विरोधी प्रावधानों को रदद कर श्रमिकों के पक्ष के नियम बनाये जाये। आशा कार्यकत्रियों के मानदेय में बढोत्तरी की जाये व आशा कार्यकत्रियों को राज्य कर्मचारी घोषित किया जाये।

कार खाई में गिरी, एक की मौत चार घायल



हमारे संवाददाता

नैनीताल। सड़क हादसें में देर रात एक कार के खाई में गिर जाने से जहां एक व्यक्ति की मौत हो गयी वहीं चार लोग गम्भीर रूप से घायल हुए है। सूचना मिलने पर पुलिस व एसडीआरएफ ने मौके पर पहुंच कर मृतक व घायलो को बाहर निकाल कर अस्पताल पहुंचाया। जहां घायलों का उपचार जारी है।

जानकारी के अनुसार आज मध्य रात्रि आपदा कंट्रोल रूम नैनीताल से प्राप्त सूचना के अनुसार कि कैंची धाम के समीप निगलाट क्षेत्र में देर रात एक स्विफ्ट डिजायर कार अनियंत्रित होकर लगभग 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। दुर्घटनाग्रस्त वाहन कुल पांच लोग सवार थे, जो सभी बरेली, उत्तर प्रदेश के निवासी थे।

दुर्घटना की सूचना प्राप्त होते ही एसडीआरएफ पोस्ट खैरना से उप निरीक्षक देवेंद्र कुमार के नेतृत्व में टीम तत्काल घटनास्थल के लिए रवाना हुई। घटनास्थल पर पहुंचकर एसडीआरएफ टीम द्वारा त्वरित रेस्क्यू अभियान चलाया गया। रेस्क्यू के दौरान स्थानीय पुलिस के साथ आपसी समन्वय के साथ टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद चार घायलों को खाई से सुरक्षित बाहर निकालकर एम्बुलेंस के माध्यम से उपचार हेतु भवाली पहुंचाया।

वहीं दुर्घटना में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी, जिसका शव खाई से बाहर निकालकर आवश्यक कार्रवाई हेतु जिला पुलिस के सुपुर्द किया गया। घायलों के नाम सनी (उम्र 23 वर्ष)पुत्र तेजराम निवासी ग्राम मिल कॉपर, बरेली, रवि पुत्र दिनेश मौर्य निवासी बरेली, संचित पुत्र हृदय नारायण तिवारी निवासी ग्राम शेखपुर, बरेली व संदीप शर्मा पुत्र रामकुमार शर्मा निवासी बरेली बताये जा रहे है। वहीं मृतक का नाम अनुज तिवारी (उम्र 29 वर्ष) पुत्र लक्ष्मी नारायण तिवारी निवासी ग्राम शेखपुर, बरेली बताया गया है।

देहरादून एयरपोर्ट रोड पर हाथी का हमला

◆बुलेट सवार को पैरों से कुचलते हुए निकला

हमारे संवाददाता

देहरादून। एयरपोर्ट रोड पर बीती देर रात एक जंगली हाथी ने बुलेट सवार युवक पर हमला कर दिया। हाथी की चपेट में आने से युवक सड़क किनारे गिर पड़ा। इसके बाद हाथी उसके बेहद करीब से गुजरा और उसके ऊपर पैर रखते हुए आगे बढ़ गया। युवक के ऊपर से हाथी के गुजरने के बावजूद उसकी जान बच गई। घटना के बाद हाथी सड़क किनारे लगी रेलिंग तोड़कर जंगल में चला गया।

घटना का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर तेजी से प्रसारित हो रहा है। वीडियो में दिखाई दे रहा है कि बुलेट सवार युवक हाथी की चपेट में आने के बाद सड़क किनारे गिरा हुआ है। इसी दौरान हाथी उसके बेहद करीब पहुंचता है और उसके ऊपर से पैर रखकर आगे निकल जाता है। इसके बाद हाथी सड़क किनारे लगी रेलिंग को तोड़ता है और जंगल की ओर चला जाता है। कुछ सेकंड का यह घटनाक्रम बेहद भयावह है। हाथी के इतने करीब आने और उसके ऊपर से गुजरने के बाद भी युवक का बच जाना राहत की बात है।



इस घटना ने एयरपोर्ट रोड और आसपास के वन क्षेत्रों में हाथियों की आवाजाही के बीच वाहन चालकों की सुरक्षा का सवाल फिर खड़ा कर दिया है। इस क्षेत्र में जंगल और आबादी के बीच संपर्क होने के कारण हाथियों का सड़कों और आसपास के इलाकों में आना-जाना रहता है। रात के समय हाथियों की मौजूदगी का पता नहीं चलने और अचानक सड़क पर सामने आने से दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है।

सीएम से की पूर्व क्रिकेटर व राज्यसभा सांसद हरभजन सिंह ने शिष्टाचार भेंट

हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से आज मुख्यमंत्री आवास में राज्यसभा सांसद एवं पूर्व भारतीय क्रिकेटर श्री हरभजन सिंह ने शिष्टाचार भेंट की।



इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हरभजन सिंह का स्वागत करते हुए भारतीय क्रिकेट में उनके उल्लेखनीय योगदान, खेल के प्रति समर्पण और शानदार उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि अपनी बेहतरीन स्पिन गेंदबाजी से विश्व क्रिकेट में विशिष्ट पहचान बनाने वाले हरभजन सिंह का खेल जीवन युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री और हरभजन सिंह के बीच विभिन्न समसामयिक विषयों पर भी चर्चा हुई।

घर में आग लगने से मची अफरा-तफरी

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। मोरी ब्लॉक के सिदरी गांव की फपराला बस्ती में मंगलवार देर रात करीब 11.15 बजे एक आवासीय मकान में अचानक आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। देखते ही देखते आग ने पूरे मकान को अपनी चपेट में ले लिया और आवासीय भवन के साथ उसमें रखा खाद्यान्न, कपड़े, सोने-चांदी के जेवर और पूरी गृहस्थी का सामान जलकर राख हो गया।

बताया जा रहा है कि मकान स्वामी अनिता पत्नी दिनेश अपने पति के उपचार के लिए रोहड़ गई हुई थीं। घर में उनके तीन बच्चे करिश्मा (19), योगराज (14) और योगेश (12) मौजूद थे। अचानक मकान से आग की लपटें उठने पर



◆तीन बच्चों ने भागकर बचाई जान, घर का सारा सामान स्वाह

बच्चों ने किसी तरह बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। गनीमत रही कि इस भीषण अग्निकांड में कोई जनहानि नहीं हुई। आग इतनी विकराल थी कि परिवार को अपना आशियाना और जीवनभर की गृहस्थी का सामान देखते ही देखते खोना पड़ा। घटना के बाद परिवार के सामने रहने और जरूरी सामान की व्यवस्था का संकट खड़ा हो गया है। घटना की सूचना मिलने पर मोरी तहसील से राजस्व निरीक्षक अनिल असवाल और राजस्व उप निरीक्षक किशन चावला मौके पर पहुंचे। उन्होंने प्रभावित परिवार को तत्काल राहत के रूप में 5 हजार रुपये की आर्थिक सहायता, दो कंबल और एक तिरपाल उपलब्ध कराया। जिला पंचायत सदस्य रवीना रावत ने भी पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता दी। आग लगने के वास्तविक कारण का अभी पता नहीं चल पाया है। प्रथम दृष्टया शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि वास्तविक कारण जांच के बाद ही स्पष्ट होगा।

उत्तराखंड कांग्रेस नेता के भाई-बेटे समेत 15 पर मुकदमा दर्ज

हमारे संवाददाता

उधमसिंहनगर। भूरारानी क्षेत्र में नौ नवंबर की शाम को वाहन क्रास करने को लेकर हुई एक मामूली कहासुनी ने हिंसक रूप ले लिया। आरोप है कि भूरारानी निवासी नवीन खेड़ा ने अपने दो पुत्रों और करीब 15 साथियों के साथ युवक पर जानलेवा हमला किया। घटना में युवक के सिर पर गंभीर चोटें आईं और एक अंगुली बुरी तरह कट गई। पुलिस ने नामजद आरोपितों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोपित पक्ष कांग्रेस प्रदेश सचिव के करीबी बताए जा रहे हैं।



वार्ड नंबर 32, दुर्गा कालोनी, भूरारानी निवासी वीरू के अनुसार, नौ नवंबर को शाम करीब सात बजे भूरारानी रोड पर नवीन खेड़ा के बेटे राघव खेड़ा से वाहन क्रास करने को लेकर कहासुनी हो गई थी। उस समय मामला शांत हो गया था। लेकिन आरोप है कि इसी घटना से नाराज होकर नवीन खेड़ा ने अपने बेटे विवेक खेड़ा, राघव खेड़ा और अन्य साथियों के साथ युवक के घर पर धावा बोल दिया। घर पर युवक नहीं मिला तो आरोपितों ने ठंडी सड़क से युवक और उसके दोस्त को गाड़ियों में बैठा लिया।

आरोप है कि दोनों युवकों को हंस विहार स्थित एक फार्म हाउस में ले

❑दो युवकों को फार्म हाउस ले जाकर पीटने का आरोप

जाया गया। वहां लाठी-डंडे, लोहे की राड़, बेल्ट और धारदार हथियारों से बुरी तरह पीटा गया। हमले में युवक के सिर दो जगह से फट गए और हाथ की एक अंगुली गंभीर रूप से कट गई। इसके बाद फार्म हाउस में ही डॉक्टर बुलाए गए और घायल के सिर व अंगुली में टांके लगवाए गए। मारपीट के बाद दोनों को वापस उसी स्थान पर छोड़ दिया गया। जाते समय आरोपितों ने पुलिस से शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी भी दी, ऐसा पीड़ित पक्ष का कहना है।

पीड़ित वीरू ने नवीन खेड़ा, विवेक खेड़ा, राघव खेड़ा, मोंटी, रावत, पिंटू, कशिश खेड़ा समेत आठ अन्य नामजद लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। सीओ विभव सैनी ने बताया कि नामजद आरोपितों के खिलाफ प्राथमिकी पंजीकृत कर ली गई है और जांच शुरू कर दी गई है। आरोपितों में कांग्रेस प्रदेश सचिव के भाई, भतीजे और बेटा शामिल बताए जा रहे हैं।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।